नैतिक प्रत्यय : उचित (Right)

Right शब्द लैटिन शब्द 'Rectus' से व्युत्पन्न हुआ है। इसका अर्थ है ऋजु अथवा नियम के अनुकूल। 'Wrong' शब्द की उत्पत्ति wrong शब्द से हुई है, जिसका अर्थ है वक्र अथवा प्रतिकूल। किसी नियम के अनुकूल या प्रति-कूल रहने पर हम किसी सिद्धांत या व्यवहार को सत् (Right) या असत् (Wrong) कहते हैं। सत् या उचित द्वारा शुभ की प्राप्ति होती है और असत् या अनुचित द्वारा अशुभ की प्राप्ति। नैतिक नियमो को मापदंड मानकर ही किसी आचरण को उचित और अनुचित घोषित किया जाता है। ये नैतिक नियम देश, काल और पात्र के अनुसार बदलते रहते हैं। सत् और असत् यानि उचित और अनु-चित शुभ और अशुभ कर्मों से संबद्ध हैं।

सिजविक के अनुसार सत् की दो कोटियां हैं - आत्मनिष्ठ (Subjective) और वस्तुनिष्ठ (Objective)। अपने अनुसार सत् आत्मनिष्ठ सत् है और जो दूसरो के अनुसार भी सत् हो, उसे वस्तुनिष्ठ सत् कहते हैं।

वस्तुनिष्ठ सत् व्यक्ति पर निर्भर नहीं एवं इसमें कर्म का परिणाम सत् हो जाता है। ग्रीन का कहना है कि "प्रयोजन की अच्छाई और बुराई का परिणाम सत्-असत् पर निर्भर है, इसलिए आत्मनिष्ठ और वस्तुनिष्ठ का भेद नहीं किया जा सकता। आत्मनिष्ठ सत् में वस्तुनिष्ठ सत् भी है।" किन्तु, ग्रीन का मत ठीक नहीं जान पड़ता।

नैतिक नियम या मापदंड के आधार पर मानव आचरण का औचित्य या अनौचित्य निर्धारित होता है। इन नैतिक नियमों के ज्ञान की चेतना सदैव नहीं पाई जाती। किसी मनुष्य को इन नियमों का स्पष्ट ज्ञान, तो किसी अन्य मनुष्य को इनका अस्पष्ट ज्ञान रहता है।